महान उद्धार

बख़्त सिंह

महान उद्धार

बख्त सिंह

GLS

PUBLISHING

महान उद्धार

बख्त सिंह

© जी.एल.एस

प्रथम संस्करण - १९५९

२१वी पुनः संस्करण - २००१

सर्वाधिकार सुरक्षित - इस पुस्तिका का कोई भी हिस्सा या अंश प्रकाशकों के लिखित अनुमति बगैर कोई भी पुननिर्माण न करे।

जी.एल.एस. द्वारा प्रकाशित

उद्योग भवन, २५०D, वर्ली,

मुंबई - ४०० ०२५, भारत

दूरभाषा : (०२२) ४९३०११६, ४९२२१६१

टेलिफैक्स : (०२२) ४९३५५३२

ई-मेल : gls@bom.2.vsnl.net.in

URL: www.glsindia. com

जी.एल.एस. द्वारा मुद्रित

पंत नगर, घाटकोपर (पू)

मुंबई - ४०० ०७५

दूरभाषा : (०२२) ५००५३५९, ५००५३९४

महान उद्धार या सुसमाचार के मुलभूत तत्व

भाई बख्त सिंह द्वारा

शास्त्रपाठ : इब्रानियों २

"तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर कैसे बच सकते है?" (आयत ३)। हम आपका ध्यान इस महान उद्धार की तरफ लाना चाहते है। "बड़ा (महान) उद्धार" इन शब्दों पर ध्यान दे। इसे "बड़ा उद्धार" क्यों कहा गया है? प्रेरित पौलूस कहता है कि अगर हम इस बडे उद्धार की उपेक्षा करेंगे तो हमे भारी हानी उठानी पड़ेगी। इसलिए वह कहता है, "उस बड़े सन्मान को स्मरण रखो जिससे तुम्हे सम्मानित किया गया है।" वह आनेवाले ऐसे जगत के बारे में बता रहा है जो स्वर्गदूतों द्वारा नही, बल्कि जो इस महान उद्धार के भागिदार हे, उनके द्वारा संचालन किया जाएगा। अब यह बड़ा रहस्य है। हम मनुष्य जाति नई सृष्टि के ऊपर शासन करने के काबिल कैसे बन सकते है? हमे परमेश्वर के वचन में बताया गया है कि यह वर्तमान जगत नष्ट होकर उसके स्थान में एक "नई सृष्टि" (नया स्वर्ग तथा नई पृथ्वि) होगी जो महिमा से परिपूर्ण होगी। यह नई सृष्टि स्वर्गदेतों द्वारा नही, बल्कि उद्धार पाए हुए लोगों द्वारा प्रशासन की जाएगी। हम पढ़ते है, कि आनेवाले जगत को उसने स्वर्गदूतों के अधीन नही किया, जिसके विषय हम चर्चा कर रहे है। परन्तु ऐसे जगत एक स्थान पर गवाही दी कि मनुष्य क्या है कि तू उसकी चिन्ता करे? और मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उसकी सूधि ले? (आयत ५ और ६)। उस दिन को याद करे जब परमेश्वर ने स्वर्गदूतों समेत इस रहस्य को खोल दिया, और इस नई सृष्टि के बारे में बताया। वह

कहता है कि किस प्रकार यह वर्तमान संसार लुप्त हो जाएगा और वह एक नई सृष्टि का निर्माण करेगा जो स्वर्गदूतों द्वारा नही, बल्कि मनुष्यों द्वारा प्रशासन की जाएगी। इस समाचार से स्वर्गदूतों पर बड़ा आघात होगा। "हे परमेश्वर, तू मनुष्यों की इतनी चिन्ता क्यों करता है? मनुष्य क्या है कि तु उसे इतना सम्मान तथा सामर्थ प्रदान करे?" हम स्वर्गदूत हमेशा तेरे साथ स्वर्ग में रहकर तेरी आज्ञा को मानते है। परन्तू ये मूर्ख मनुष्य तुझे अक्सर परेशानी में डालते है। वे हमेशा प्याज और लहसून के लिए कुडकुडाते है। फिर भी तू उन्हे इतनी इज्जत तथा शक्ति देता है। मनुष्य क्या है, मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि ले? स्वर्गदूत भी इस बात को समझने में कठिनाई महसूस करते है। फिर भी परमेश्वर का वचन यूं ही कहता है, और वह कभी टलता नही। हम विश्वास करते है।

अब यह सब कैसे सम्भव हुआ? हमे यह समझना जरुरी है। यही कारण है कि हम इस महान उद्धार पर चिन्तन कर रहे है। यह इतना महान इसलिए है कि यह एक पापी को नाली में से उठाकर नई सृष्टि (स्वर्ग) का अधिकारी बनाता है। इस शहर के कोई कोने में मैले कपड़े पहने हुए बैठे भिखारी की कल्पना करे। वह ऐसा दिखता है मानो उसने पीछले ३५ वर्षों मे कभी स्नान न किया हो। आप जाकर उससे कहे कि वह भारत का राष्ट्रपति बनने वाला है। क्या वह आप पर विश्वास करेगा? वह कहेगा, "आप क्या कह रहे हो? मुझे देखिए, मेरे मैले कपड़े देखिए, मेरा बदसुरत तथ दुर्गंधमय चेहरा देखि। मैं राष्ट्राध्यक्ष कैसे बन सकता हूँ?" पर हम पापी मनुष्य उस भीखारी से भी बढतर है, क्यों कि हम भ्रष्टाचार तथा सड़न से भरे हुए है। इसके

बावजूद भी परमेश्वर हमे नई सृष्टि के राज्यपाल तथा अधिकारी बनानेवाला है। इस उद्धार को "महान उद्धार" कहलाने का यही कारण है।

१.	प्रतिस्थापना	(Substitution)	८.	मुक्ति	(Liberation)
२.	धर्मीकरन	(Justification)	९.	रुपान्तर	(Transformation)
३.	मेलमिलाप	(Reconciliation)	१०.	पुत्रत्व	(Son ship)
४.	छुटकारा	(Redemption)	११.	पवित्रिकरण	(Sanctification)
५.	प्रायश्चित	(Propitiation)	१२.	याजकत्व	(Priesthood)
६.	पुनर्जनन	(Regeneration)	१३.	राजपदाधिकारी	(Kingship)
७.	पहचान	(Identification)	१४.	महिमा	(Glorification)

यह उद्धार के चौदह पहलू है। जब बच्चे का जनम होता है, उसके अस्थि, स्थायु, रक्तवाहिनी, रक्तपेशी तथा सभी अंग परिपूर्ण रुप से होते है। पोषण द्वारा उनकी वृद्धि होती है। उसी प्रकार जब मनुष्य का पुनर्जनन होता है, तो उसे अनंत जीवन प्रदान किया जाता है और आत्मिक रुप से ये सभी चौदह पहलू उसके बन जाते है। जैसे – जैसे वह बढ़ता जाता है, वह उसे अधीकाधीक अनुभव करता जाता है, जिस प्रकार शारीरिक रुप से जन्मा बालक वृद्धि पाकर दौड़ता है, अधीक भोजन ग्रहण करता है तथा उसके मतिष्क की भी वृद्धि होती है। जिस प्रकार इस बालक के शरीर में हरएक तत्व होता है, उसी प्रकार एक विश्वासी का भी आत्मा में होता है। आत्मिक वृद्धि के जरिए वह इस उद्धार के भिन्न-भिन्न पहलुओं का आनंद महसूस करता जाता है।

१. प्रतिस्थापना (SUBSTITUTION)

इसका मतलब यह है कि प्रभु यीशु मसीह मेरे स्थान में मर गए। उसने मेरी जगह ली और मेरे लिए मरा। यशायाह ५३:५, ६ मे हम पढ़ते है, "वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया; वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शानित के लिए उस पर ताड़ना पडी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ", और रोमियों ४:२५, "वह हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया।" अगर आपको उद्धार का अनुभव लेना है तो सबसे पहले यही पाठ पढ़ना चाहिए। मैने मेरे विचारों, शब्दों तथा कृति में किया हुआ हर एक पाप उसने अपने ऊपर ले लिया। नही तो मैं परमेश्वर से बात करने या उसके समीप भी आने के काबील न था, क्यों कि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है। मेरा हरएक पाप मृत्यु के काबिल था। मै, मनुष्य होने के नाते इसकी कीमत नही चुका सकता था। इसलिए प्रभु यीशु ने मेरे मेरे लिए यह कीमत पूरी रीति से चुकाई। इसलिए जब हम उसके समीप आते है, हम हमारे अपराध मान लेते है। ऐसा करने से हम हमारे पापों को उसके ऊपर डाल देते है।

परन्तु उसके लिये यह जरुरी था कि वह हमारे पापों के खातिर मरने से पूर्व अपने आप को निर्दोष साबित करे। काई भी मनुष्य उसे दोषी नही ठहरा सकता था। वह पूछ सकता था, "आप में से कौन मुझे दोषी ठहरा सकता है?" (युहन्नस ८:४६)। इसलिए वह मेरा "सिद्ध प्रतिस्थापक" (perfect substitute) हो सकता है।

२. धर्मिवद्धरम (JUSTIFICATIONS)

इससे यह अभिप्राय है कि उसने (यीशु ने) मुझे परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी तथा नितिमान ठहराया है। से हमारे अपराधों के कारण मारा गया तथा हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए उठाया गया। (रोमियों ४:२५)। वह इसलिए उठा कि मैं धर्मी ठहरुँ। इसका अर्थ क्या है? इसका अर्थ यह है कि उसने मुझे ऐसा बनाया मानो मैंने जिन्दगी में एक भी पाप न किया हो। कल्पना करे कि इस शहर में एक डाकू है। हरएक व्यक्ति उसे डाकू के रुप में पहचानते है। वह पकड़ा गया तथा उसे कचहरी में प्रस्तुत किया गया। और कल्पना करे कि शहर की लगभग १५,००० लोंगों की आबादी उसके विरुद्ध गवाही दे रही है, "मैने उसे केला चोरी करते देखा: मैने उसे मुर्गा चोरी करते हुए देखा है," आदि आदि। वह चोर या डाकू जानता है कि जो कुछ ये लोग कह रहे है वह बिल्कुल सही है। उसकी किसी व्यक्ति का चेहरा देखने की हिम्मत नही हो रही है। वह जानता है कि न्यायाधिश उसे क्या कहेगा। वह यह भी जानता है कि उसे अपने किए की सज़ा मिलनी ही है। फिर वह ऊपर दृष्टि करके देखता है और पाता है कि उसे दोष लगानेवाली भीड़ चली गई है। जज भी उसे कहता है, भाई, चले जाओ, आपके विरुद्ध कोई गुनाह नही है। अब यह आदमी बाजार में सर उठाकर चल सकता है। यह रहा 'प्रतिस्थापन' (JUSTIFICATION) का अर्थ। यद्यपि हम पापी थे, अब हमे धर्मी ठहराया गया है माने हमने कुछ भी गलत न किया हो। "अत: अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नही।" (रोमियों ८:१) : यह धर्मीकरण हमे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास रखने के द्वारा प्राप्त होता है।

उत्तरी भारत के कई इलाकों मे जब लड़की का विवाह हो जाता है तो वह अपने विवाह पूर्व के कपड़े तथा गहने पहन नही सकती। विवाह के बाद वह सिर्फ वही कपडे पहनेगी जो उसे अपने पति द्वारा दिए जाएँगे। इसी रीति से हम भी प्रभु यीशु मसीह की धार्मीकता का पहनते है। हमारे पुराने स्वभाव की तुलना मैले चिथड़ों के साथ की गई है। हम नए वस्त्र धारण करते है, यानी यीशु मसीह की धार्मीकता को पहनते है। हम आराधना सभा मे जाने से या प्रार्थना से धर्मी नही बनते। परन्तु विश्वास के द्वारा हम प्रभु यीशु मसीह की धार्मिकता को ग्रहण करते है। जब परमेश्वर मुझे देखता है तो वह मेरा पुराना स्वभाव नही, बल्कि प्रभु यीशु मसीह की धार्मीकता मुझमे देखता है।

जब मै छोटा लड़का था, मैं अन्य लडकों के साथ खेला करता था। एक दिन उनमें से एक जो बहुत गन्दगी से भरा हुआ था, मै घर ले आया। मेरी माँ ने मुझे पूछा, "यह लड़का कौन है?" मैने उसका हाथ पकड़कर कहा, "यह मेरा दोस्त है।" फिर मेरी माँ ने उसे दूध तथा खाने के कुछ पदार्थ दिये क्योंकि उसने उस लड़के में मुझ को देखा था। अगर वह अकेला आता तो मेरी माँ उसे अपने घर में अन्दर आने न देती। मेरे कारण उसे घर मे स्वीकार किया गया। धर्मिकरण का यही मतलब है। यद्यपि एक समय में हम पापी थे, हम दृढ़ता के साथ स्वर्ग में प्रवेश करते है। हम परमेश्वर के अद्भुत कामों का अनुभव करते है जो उसने हमारे उद्धार के खातिर किए। वह दरअसल अपनी स्वयं की धार्मिकता हमे प्रदान करता है।

एक बार किसी एक गरीब मनुष्य को राजा ने भोजन के लिये बुलाया। परन्तु उस व्यक्ति के पास पहनने के लिए अच्छे वस्त्र नही थे। राजा यह बात जानता था इसलिये उसने अपने एक सेवक के द्वारा उसके लिए अपने स्वयं के वस्त्र भेजे। उस गरीब आदमी ने राजा के दिए हुए वस्त्र धारण किये और हियाव के साथ राजभवन में प्रवेश किया। दरबार में उपस्थित सभी लोगों ने उसके पहने हुए वस्त्र के कारण उसका सम्मान किया। जब हम उद्धार पाते है, हम धार्मिकता के वस्त्र परिधान करते है। (यशायाह ६१:१०)। हम प्रभु यीशु मसीह के अपने स्वयं के वस्त्र धारण करते है। हम स्वयं मसीह को पहन लेते है। (गलतियों ३:२७)। हमारी आत्मा को मसीह की आत्मा घेर लेती है, जब हम उस पर हमारा विश्वास रखते है, कि वह हमारे पापों के खातीर मारा गया तीसरे दिन फिर से जी उठा।

३. मेलमिलाप (RECONCILIATION)

इस बात को समझने के लिये हमे यह जानना जरुरी है कि पापी होने के नाते हम परमेश्वर के बैरी थे क्यों कि हम हमारे कार्यों के द्वारा उसे हमेशा चोट पहुँचाते थे। अगर कोई बालक हमेशा आपको ठोकर खिलाए तो क्या आप उसे अपना मित्र कहेंगे ? ऱ्मने ऐसी खताएँ की है जो उसे हमेशा दु:ख, पीड़ा तथा दर्द देती आई है। यह हमारी उससे जो अन्दृनि वैमनश्य है, उसके कारण होता आ रहा है। प्रभु यीशु मसीह उस 'अन्दृनि मनमुटाव' (inward enmity) को दूर करके हमारा परमेश्वर के साथ मेलमिलाप करते है। "और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था..., मिटा दिया ... एक नया मनुष्य उत्पन्न कर के मेल करा दे।" (इफिसियों २:१५)। "और आप उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेलमिलाप ... तुम जो पहले निकाले हुए थे, ... तुम्हारा भी मेलमिलाप कर लिया ताकि तुमें अपने सम्मुख पवित्र और ... बना।" (कुलुसियों १:२०-२३)। हम स्वभाव ही जन्म से परमेश्वर के बैरी है। हम कह सकते है कि अन्धकार ज्योति का, जीवन का शत्रु है; भ्रष्टाचार शिष्टाचार का शत्रु है। इसलिये हम जो अंधकार में चलते है दण्ड के अधिन है और उस परमेश्वर के बैरी है जो सदा ज्योति में रहता है और अमर है। परमेश्वर स्वर्गीय (पवित्र) बनना चाहता है और हम सांसारिक (अपवित्र) बनना चाहते है। हम परमेश्वर के हरएक विचार के खिलाफ कार्य करके उसे नष्ट करना चाहते है। हम इसे अनजाने या जानबूझके करे पर यह हमेशा उसके विरुद्ध ही रहता है। जब हम किसी के दुश्मन बनते है तो हम अक्सर उसे चोट पहुँचाने का कार्य करते है। हमारा भी परमेश्वर के प्रति ऐसा ही

रवैया (attitude) होता है। दैवी शक्ति के द्वारा ही इस बैर को नष्ट किया जा सकता है। हम जानते है कि केवल एक व्यक्ति से समझौता (मेल) करना भी कितना कठिन है। हम कह देते है, "अगर मै मर भी जाऊँ तो चलेगा, पर मैं उसकी सूरत तक नही देखना चाहता।" मेरे स्कूल मे पढ़ते समय मेरा एक मित्र था। एक दिन हमने झगड़ा किया और बैरी बन गए। इसके पहले हम हमेशा एकसाथ रहते थे। पर अब, जब मै उसे एक तरफ से आते देखता तो मै दूसरी तरफ मुड़ जाता था। ऐसा तीन महिनों तक चलता रहा। कभी-कभी मेरे मन में समझौते का विचार आता था, पर फिर मै कहता था, "पहले उसे मेरे पास आने दो।" फिर एक तीसरा व्यक्ति आया और उसने कहा, "आप इतने मुर्ख क्यों है?" और उसने हम दोनों के हाथ मिलाए, और हम खुश होकर वापस मित्र बन गये। हम यह काम स्वयं नही कर सकते। यह हमारा मानवी स्वभाव है। मेरे पिताजी और उसके पिताजी और सब परमेश्वर के बैरी थे। यह दुश्मनी (बैर) ६००० वर्षों तक चलता रहा। इस बैर को हम स्वयं या कोई अन्य मनुष्य दूर नही कर सकता था। यह सीर्फ दैवी शक्ति के द्वारा ही सम्भव था। इस कार्य को प्रभु यीशु ने अपनी क्रूस की मृत्यु के द्वारा पूरा किया। वह इसलिये मरा ताकि वह सभी वस्तुओं का परमेश्वर से मेल कराए। हम एक समय शत्रु थे, अब मित्र बन गये है, यही "मेलमिलाप"(Reconciliation) है, परमेश्वर की स्तुति हो! इसी कारण हम अब एकसाथ चलना चाहते है। एक समय प्रार्थना के लिये जाना परेशानी थी। अब प्रार्थना के बगैर जी नही सकते।

४. छुटकारा (REDEMPTION)

इफिसियों १:७ और १ कुरिन्थियों ६:२० मे हम पढ़ते है, "हमे दाम देकर खरीदा गया है।" एक समय हम शैतान के गुलाम बनकर कार्य करते थे और कोई भी हमे इससे स्वतंत्र नही कर सकता था। तब प्रभु यीशु ने अपना खून बहाकर क़ीमत चुकाई और हमे छुड़ाया। पुराने जमाने मे गुलामों को बाज़ार में बेचते थे जिस प्रकार आज गाय, भैंस बाज़ार में बेची जाती है। एक बार एक धनवान मनुष्य गुलामों को बेच रहा था जिसमें एक छोटा बालक था। एक राहगीर (passer - by) को उसपर दया आ गई। अत: उसने उसकी कीमत चुकाई और उसे कहा, "अब तुम अपने घर जा सकते हो।" परन्तु उस बालक ने कहा, "मेरा कोई घर नही है। आप ही मेरे माता-पिता है। मै आपके साथ रहूँगा और खुशी से आपकी सेवा करुँगा।" शैतान हमे कह रहा था, "मैं तुम्हे जान`नही दूँगा।" परन्तु प्रभु यीशु मसीह ने हमारे छुटकारे की कीमत उसके बहुमुल्य लोहू के द्वारा चुकाई जो उसने कल्वरी के क्रूस पर बहाया। अब वह विश्वासियों से कहता है, "अब तुम जा सकते हो; तुम स्वतंत्र हो गये हो।" परन्तु विश्वासी कहता है, "प्रभु, मेरा रहने का कोई स्थान नही है। आप ही मेरे पिता और माता है। मै सदैव आपके साथ रहुँगा और आनंद से आपकी सेवा करता रहूँगा।"

इस प्रकार हम उसके "निज धन"(peculiar treasure) बने हुये है। जब हम राजभवन में जाते है, हम उसका खजाना देखना चाहते है। उसी प्रकार हम भी जब स्वर्ग मे जाकर परमेश्वर से पूछेंगे, "अपना निज धन दिखाइए," तो परमेश्वर हम से कहेगा, "युहन्ना को देखिए, पौलुस को देखिए; ये मेरा निज धन है। अगर हम किसी

चीज के लिये भारी क़ीमत चुकाते है तो वह चीज आपके लिए बहुमुल्य हो जाती है। दो या तीन आने (annas) वाली चीजों इधर-उधर फेंक दी जाती है। परंतु अगर एक लाख रुपए मुल्य की कोई वस्तु हो तो उसे अत्यन्त सुरक्षित जगह में रखा जाएगा। इसी रीति से परमेश्वर ने हमे उसके पुत्र के बहुमुल्य लोहू से खरीदा है और हम उसके लिये स्वर्गदूतों से भी अधिक मूल्य रखते है। हमे मनुष्य भले ही आदर न करे। वे कह सकते है, “उसका चेहरा काला तथा उसके होंठ मोटे है।” परन्तु परमेश्वर की नजर मे हम मुल्यवान है और वह कहता है, “वह मेरा हिरा है, वह मेरा मोती है।” यदि हम छुटकारे का अर्थ समझते है तो उद्धार का अधीक आनंद ले सकते है। जब हम जान जायेंगे कि हम प्रभु की अमानत है, तो हम बुरी आदतों के शिकार कभी नही होंगे। मिट्टी के बने साधारन बर्तनों को ज्यादा साफ नही किया जाता; पर सोने के बर्तन हमेशा चमकाए जाते है। यदि हम जानते है कि हमारा शरीर परमेश्वर का मंदीर है, तो हम इसे पवित्र रखेंगे तथा बुरी आदतों से दूर रहेंगे।

५. प्रायश्चित (PROPITIATION)

रोमियों ३:२२-२५ मे हम पढ़ते है, "..... मसीह यीशु, जिसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया।" अब हम विश्वास करते है क पमरेश्वर ने हमारे सभी अपराध क्षमा किये है। फिर भी हम सोचते है, "तीन महिने पहले मैने यह किया, और एक साल पहले मैने वह किया," और हम निराश हो जाते है। हमे यह समझने की आवश्यकता है कि मसीह यीशु हमारे लिए एक सिद्ध बलिदान है जो हमारे सभी पापों को इतना दूर हटाता है जितनी दूरी पूरब से पश्चिम में है। (भजन १०३:१२)। उसने मेरे सारे अपराध समुंदर की गहराई में डाल दिये है। (मीका ७:१९)। यदि शैतान हम पर दोष लगाये, तो हम कह सकते है, "अरे शैतान, अगर तू मेरे पापों को ढूँढना चाहता है तो, जाकर समुंदर की गहराई में डुबकी लगा, तुझे वहाँ मेरे पाप मिलेंगे।" प्रभु कहता है कि मैने तुम्हारे पापों को काली घटा के समान और तेरे अपराधों को बादल के समान मिटा दिया है; मेरी ओर फिर लौट आ, क्यों कि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है। (यशायाह ४४:२२)। शैतान ने शुरुं में मुझे किस प्रकार सताया था यह बात मुझे याद है। परमेश्वर ने मुझे उसके अनुग्रह के द्वारा १४ दिसम्बर, १९२९ को बचाया। (उद्धार किया)। मैं बहुत खुश था। फिर कुछ समय तक मेरे पास पैसे नही थे। और उसी समय शैतान ने मुझे कहा कि यह तेरे इस तथा उस पाप का नतिजा है। मैं ने उसकी बात कुछ समय तक मानी, पर अन्त में परमेश्वर ने मुझे प्रकट किया कि मेरे पाप परमेश्वर ने उतने दूर किये है जितनी दूर पूरब पश्चिम से है, वह उन्हे वापस स्मरण नही करता। इसलिये हमे यह जानने की

आवश्यकता है कि किस प्रकार हमारा हरएक पाप हमसे दूर किया गया है और किस प्रकार परमेश्वर ने उसका नामोनिशान मिटा ड़ाला है। (यशायाह ४३:२५)। यदि आपने यीशु के लहु का स्वीकार किया है तो शैतान को आपको धोखा देने का अवसर न दे। धन्य है वह मनुष्य जिसका अपराध क्षमा किया गया है तथा ढाँपा गया है। (भजन ३२:१)। हमारे पाप कितने भी घिनौने क्यों न हो, परमेश्वर ने उन्हे प्रभु यीशु मसीह के लहू से ढ़ाँप लिया है। इसी कारण फसह के पर्व के दिन दरवाजे के इर्द-गिर्द तथा दोनों बाजू पर मेमने का लहू छिड़काया जाता था। प्रभु ने तुम्हारे सभी अपराध तथा निर्बलताओं को पूरी तरह से ढाँप दिया है। अब हम उसके सामने एक सिद्ध (complete) मनुष्य के रुप में खड़े हो सकते है। बहुतसी बार हम कहते है, "मेरे जैसा अभागा मनुष्य सिद्ध कैसे हो सकता है।" हर एक इन्सान में कमियाँ (faults) है, कुछ इन्सान में खुली है, कुछ इन्सान में ये गुप्त है। किन्तु यीशु का लहू इन सब को ढाँपता है। इस रीति से हम विश्वास का अंगिकार करते हुए लहू को कबुल करते है, और पाप पूरी रीति से ढक जाता है।

६. पुनर्जनन (REGENERATION)

उसने हमे नई सृष्टि बनाया है। (२ कुरिन्थ ५:१७)। अगर कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है। हम हर प्रकार से नये बन जाते है। कुछ लोग सोचते है कि कुछ बुरी आदतों को छोड़ने से हमारा नया जन्म होता है। यह गलत है। परिवर्तन (पुनर्जनन) का मतलब है मसीह में नही सृष्टि होना और सभी बातें परमेश्वर की है। (आयत १८)। पवित्र आत्मा हमारे अन्दर इस प्रकार आता है कि हम पूरी रीति से नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा से बिल्कुल नए इन्सान बन जाते है। (तितुस ३:५)। निम्न बातों से हम नई सृष्टि बन जाते है:

अ) यहेजकेल ३६:२६ :

हमे नया मन, नया हृदय तथा नई आत्मा मिल जाती है। इस आयत में हमारे मुल हृदय को 'पाषाण-हृदय' (stony heart) कहा गया है। इसे ऐसा क्यों कहा गया है? समझो कि आपके घर के अन्दर एक पत्थर है और आप उसे इस प्रकार पुकारते रहो, "मेरे प्रिय भाई, मेरी प्यारी बहन, मेरे प्यारे बच्चे!" और आप उसे बार-बार गले लगाते रहो, तो क्या इससे आप कुछ समाधान पाएँगे? आप उससे कुछ भी कहे या करे, वह पत्थर हमे कुछ भी प्रतिसाद न देगा। परमेश्वर हमारे पास इसी प्रेम के साथ आता है, पर हम उससे दूर चले जाते है। हम परमेश्वर के कामों को प्रतिसाद नही देते। इसी कारण मनुष्य के हृदय

को "पत्थर का हृदय" कहा गया है। परन्तु परमेश्वर कहता है, मैं उनका पत्थर दिल निकालकर उन्हे नया दिल (हृदय) दूँगा।

ब) इब्रानियों ९:१४

फिर परमेश्वर हमे एक नया विवेक, "शुद्ध विवेक" (purged conscience) देता है। इसके पहले हमारा विवेक "अपराधी विवेक"(Guilty conscience) रहता है। वह इतना मरा हुआ रहता है कि हम परमेश्वर के खिलाफ पाप करते रहते है और लोगों को धोखा देते रहते है। पर अब पाप का विचार भी हम नही कर सकते। मै एक मनुष्य को जानता हूँ जो उसके उद्धार के पूर्व तंबाकु (tobacco) का गुलाम था। पवित्र आत्मा उसके अन्दर कार्य करने लगा और वह उद्धार पाया। एक दिन वह मेरे पास आकर कहने लगा, "मैने बड़ा पाप किया है, कृपया मेरे लिये प्रार्थना करे।" मैने कहा, "आपने क्या किया?" उसने उत्तर दिया, "उद्धार पाने के बाद मैने धुम्रपान करना छोड़ दिया था, पर कल रात मैने सपने में धुम्रपान किया, और मैं व्याकूल हो गया हूँ।" इसके पहले वह बिना सोचे-समझे दिन-रात धुम्रपान किया करता था। पर अब सपने मे भी धुम्रपान करना उसके लिये भयंकर था। हमारे बीच ऐसे बहुत से लोग है जो रविवार की प्रार्थनासभा समाप्त होते ही धुम्रपान (smoking) करते है।

मैं उद्धार पान के पूर्व रेल यात्रा करते समय 'अनुमति से ज्यादा सामान' (excess luggage) लेकर यात्रा करके भारतीय रेल को धोखा दिया करता था। मै थोड़े पैसे बचाने के लिए मेरी किताबे बिस्तर पर ड़ालता था। अगर मैं पकड़ा भी जाता तो मै टिकट कलेक्टर को आठ आना (eight annas) देकर उससे छूटता था। उन दिनों में हमे घी के लिये जकात (octroi) भरना पड़ता था। जब जकातदार (octroi officer) मुझे पूछता था यदि मेरे पास कोई जकातीय वस्तुएँ (dutiable articles) है, तो मै उसे कह देता था, "जी नही, मेरे पास ऐसी कोई वस्तु नही है।" इस प्रकार मैं कुछ पैसे बचाने के लिए झूठ बोला करता था। पर उद्धार पाने के बाद मुझे रेल अफसरों के पास जाकर उसे कहना पड़ा कि वह मुझसे पूरे भुगतान की माँग करे। यद्यपि वे इसकी उपेक्षा करते थे, मै उन्हे कहता था, "नही सर, मैं एक मसीही हूँ। मै रेल को धोखा नही देना चाहता। इसी प्रकार शायद आपने भी दफ्तर से कुछ पेन्सिल, पेपर या पीन बिना किसी 'दोषी भावना' (guilty feeling) के घर ले आये होंगे। पर अब उद्धार पाने के बाद यह भयंकर पाप – सा महसूस होता है। एक बार एक दस साल उम्र की लड़की अपने अपराध को कबुल करते हुए मेरे पास आकर कहने लगी, "मै प्रतिदिन मेरी बहन के कमरे से फेस पावड़र चुरा लेती थी, अब मै इस खयाल से अस्वस्थ हूँ, कृपया मेरे लिये प्रार्थना कीजिए।" इस प्रकार आपको एक 'शुद्ध विवेक' (purged conscience) दिया जाता है ताकि आप उद्धार के पूर्व जो गलत काम करते थे, उसे न दोहराए।

क) फिर आपको एक नया मन, प्रभु यीशु मसीह का मन दिया जाता है। (फिलिपियों २:५)। यह मन आपको नम्र बनाता है। हम सब जब हमारे पास कुछ विशेष पात्रता होती है तो घमण्ड करते है। पर मसीह का मन हमे अपने आप को मसीह के पीछे छिपाए रखता है। वह स्वयं परमेश्वर होकर भी एक सेवक बन गया, तो फिर उसके प्रति हमारा रवैय्या क्या होना चाहिए? णसीह का स्वभाव (mind of christ) हमे परमेश्वर की महिमा करने के लिये प्रोत्साहित करता है। क्या आप सच्चे मन से कह सकते हो कि तुम्हारा स्वभाव मसीह का स्वभाव है? एक नेग्रिस्तो प्रचारक (Negro preacher) था जो इस टेक्स्ट से ५२ वर्ष तक हर रविवार को प्रचार करता था: "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।" प्रभु यीशु ने कहा, "मुझसे सीखो, क्यों कि मैं मन में दीन और नम्र हूँ।" प्रभु यीशु मसीह की दीनता (meekness) हमारे अंदर आसानी से नही आती। हम आशिष पाने पर घमण्ड करते है। इसलिए स्मरण रहे कि हमे हर समय हमारे जीवन के द्वारा हरएक व्यक्ति को मसीह का स्वभाव को दिखाना है।

ड) प्रभु हमे एक नया स्वभाव भी प्रदान करता है। २ पतरस १:४ में हम पढ़ते है कि मसीह के द्वारा हम 'ईश्वरीय स्वभाव' के सहभागी हुए है। अगर हमे इस संसार के भ्रष्टाचार से बचना है तो हम स्वर्गीय स्वभाव की माँग करते हुए, परमेश्वर के अभिवचन का इकरार करते हुए ईश्वर को पुकारे। हर एक हृदय

में कुछ इच्छाएँ होती है जो अन्त मैं भ्रष्टाचार (corruption) लाती है। पर ईश्वरीय स्वभाव (Divine nature) हमे इसके ऊपर जय प्रदान करता है। इसके जरिए हम सदाचारी बन जाते है।

इ) परमेश्वर हमे एक नया ज्ञान देता है। १ कुरिन्थ १:१३ में हम पढ़ते है कि प्रभु यीशु स्वयं हमारे लिये 'ज्ञान' (wisdom) बना है। यह वह ज्ञान नही है जो हमने स्कूली शिक्षा से प्राप्त किया है या इस संसार से प्राप्त किया है। नीतिवचन ३:५ में हम पढ़ते है, "तू अपनी समझ का सहारा न लेना। हम हमारे मस्तिष्क के ऊपर निर्भर नही रह सकते। जब हम कुछ जानते हैं तो हम समझते है कि हमे सबकुछ पता है। इंग्लैंड में एक जन होके गया जो सोचता था कि अगर वह बहुत किताबें पढ़ेगा तो वह महान बन सकेगा। इसलिए उसने किताबे इकट्ठा करना आरंभ किया तथा एक बड़ा ग्रंथालय (Library) बनाते हुए किताबे पढ़ना शुरु किया। काफी समय के बाद किसी ने उससे पूछा, "श्री.अस्किथ आपने अब तक क्या सीखा?" उसने उत्तर देते हुए कहा, "मैने यह सीखा है कि अबतक मुझे कुछ भी पता नही है।" कोई भी मनुष्य अपने स्वयं के ज्ञान पर निर्भर नही रह सकता। आप अनुग्रह में जैसे बढ़ते हो, वैसे आपको ज्ञान के लिये परमेश्वर पर निर्भर होन पड़ेगा। याकूब ३:१७ में हम पढ़ते है, "पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाष और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है।" इसकी तुलना नितिवचन ९:१ में बताई हुई सात खम्बों के

साथ की जा सकती है। “बुद्धि ने अपना घर बनाया, और उसके सातों खंभे गढ़े हुए हैं।” इस बुद्धि के साथ आप एक संतुलित जीवन जी सकते है।

फ) प्रभु हमे एक नई दृष्टि देते है। “क्यों कि अब हम रुप को देखकर नही, पर विशस से चलते है।” (२ कुरिन्थ ५:७)। विश्वास के द्वारा हम वे चीजें देखतें है जो सालों बाद होनेपर है। हम आनेवाली महिमा को देख सकते है। जब हम पहाड़ो पर होकर चलते है तो हम दूर-दूर के स्थान देखना चाहते है। उस समय दूरबीन (binoculars) हमारी सहायता करती है। खास दूरबीने बनाई गई है जिसके जरिए आप तारों को देख सकते है जो हमसे लाखों मील दूरी पर स्थित है। परन्तु विश्वास की आँखों के द्वारा हम सीधे अनंत भविष्य (eternity future) को देखते है, यहाँ तक कि हम किसी प्रकार स्वर्ग के प्रशासक तथा अधिकारी होनेवाले है।

ग) हमे परमेश्वर की वाणी सुनने के लिए नए कान भी मिल जाते है। (प्रकाशितवाक्य २:७, ११, १७)। “जिसके कान हो, व सुन ले।” इन्ही दो अध्याय में इन शब्दों को सात बार दोहराया गया है। केवल वही लोग जिन्हे आत्मिक कान प्रदान किये गये है, परमेश्वर की आवाज सुन सकते है। प्रकाशित वाक्य की किताब में प्रभु रहस्य की बाते बता रहा था। इस सामान्य

उद्धार के द्वारा हमे आत्मिक कान दिए गये है ताकि हम महान स्वर्गिय रहस्य को समझ सके।

ह) नया मुख तथा नया गीत। "उसने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है।" (भजन ४०:३)। अब हमारे पास एक नया मुख है जो परमेश्वर की स्तुति गाता है। जो धुम्रपान करते है वे अपने मुँह तंबाकु की बदबू छोड़ देते है। जो पान – सुपारी खाते है उनके मुँह से पान की बदबू आती है और जो पायरिया (pyrrohoea) से पीड़ित है उनके तो पास भी हम खड़े नही हो सकते। पर जब हमारा सही में नया जन्म होता है तथा हमे अनंत जीवन मिलता है, तो हमारे मुख से जब भी हम गाते है, परमेश्वर की ज्ञान की बातों की खुशबू निकलती रहती है। हम गरीबी में, परेशानी में, अकेलेपन में, जब लोग हम पर झूठे इल्जाम लगाते है तब, तथा जब हमारे साथ सबकुछ गलत होता है तब भी परमेश्वर की प्रशंसा कर सकते है। जब भोजन में ज्यादा नमक होता है, या जब बिल्कुल नही होता, तब भी आप हर बात के लिए, हरएक स्थान में हर समय परमेश्वर की प्रशंसा कर सकते है।

इ) नया चेहरा। "परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रुप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं। (२ कुरिन्थ ३:१८)। उतर

भारत में एक गरीब मसीह परिवार रहता था। एक दिन एक मुस्लिम पठान ने उस परिवार के मुखिया से पूछा, “क्या मैं जान सकता हूँ कि आप कौन-सा तेल इस्तमाल करते हो, जिससे आपके चेहरे दिनभर चमकते रहते है?” उस मनुष्य ने उत्तर दिया, “हम कोई तेल इस्तमाल नही करते या किसी क्रिम को भी नही लगाते। परन्तु हम प्रतिदिन सुबह, दोपहर तथा शाम को प्रार्थना करके हमारी, रोटी (चपाती), दाल और सभी वस्तुओं के लिये परमेश्वर का शुक्र (धन्यवाद) करते है।” मै ने अमरीका में वृद्ध महिलाओं को अपने आप को सुन्दर दिखने हेतु पावडर तथा लाली (Lipstick) का इस्तमाल करते हुए देखा है। पर इसका कोई लाभ नही। मनुष्य का चेहरा काला, होंट मोटे, कान लम्बे भले ही हो, पर वह व्यक्ति परमेश्वर की सन्तान है तो परमेश्वर का तेज जरुर उसके चेहरे पर चमकेगा। क्या यह अद्भुत नही?

१९३५ में खेत्ता (quetta) में एक बड़ा भूकम्प हुआ था जिसमें ५८,००० लोग मारे गये थे। उस समय मैं वहाँ पर पुनर्वसन (rescue work) के कार्य हेतु उपस्थित था। मै नही जानता था कि मसीह लोग कहाँ पर रहते थे। परन्तु मैने कहा, जो चमकता चेहरा होगा वही मसीही होगा। सी तकनीक के जरिए मै बहुतों को खोजने मे कामयाब रहा। अब बताइए, आपका चेहरा कैसा है? घर जाकर आइने में देखिए। महान उद्धार हर एक व्यक्ति को चमकीला चेहरा प्रदान करता है, जो हमारे प्रभु के साथ बोलने तथा चलने से और अधिक

रौनक लाता है, जिस प्रकार मूसा का चेहरा, जब वह परमेश्वर से बातचित करके पहाड़ से नीचे आया था, चमकता था।

ज) नये वस्त्र। "उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आपको सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है।" (यशायाह ६१:१०)। उद्धार के पूर्व लोग चमकदार कपड़े, भारी सूट, सुंदर टाय, सुन्दर टोपियाँ तथा सिल्की रुमाल की चाहत रखते है। स्त्रियाँ चमकीली साडियाँ, शानदार गहनों की चाहता रखती है। परन्तु परमेश्वर हमे धार्मिकता के वस्त्र पहिनाता है जो हमे उसकी उपस्थिति में अधीक खुबसुरत बनाते है।

क) नये जूते। कुछ लोगों को नए-नए जूते पहनने का शौक रहता है। मै जब पाठशाला में पढ़ता था तब मरे पिताजी ने मेरे लिये एक इंग्लिश जूतों की जोड़ी खरीदी। मै उन्हे पहनकर बड़ा खुश हुआ तथा उनकी अच्छी देखभाल करता था। रास्ते में जब कभी मैं पत्थर या काँटे देखता था, तो मै उन्हे पैरों से निकालकर नंगे पैर चलता था। मैं अपने मित्रों को जब मेरे जूते दिखाता था तो मुझे गर्व होता था। परन्तु परमेश्वर हमे नए जूते देता है। आप उन्हे जितना इस्तमाल करेंगे उतने ही वे मजबूत बनते जाते है। साधारन जूते दस महिनों बाद पुराने हो जाते है, पर ये जूते जो परमेश्वर देता है, आप १००० मील यात्रा

करने पर भी सुसमाचार सुनाने के लिये आप बिल्कुल फ्रेश रहेंगे। ये जूते मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते है। (इफिसियों ६:१५)।

ल) नया भोजन। प्रभु यीशु कहते है, "जीवन की रोटी मैं हूँ।" (यूहन्ना ६:३५)। और, "मेरा भोजन परमेश्वर की इच्छा पूरी करना है।" (युहन्ना ४:३४)। एक बार एक मसीह साधु को बकरे के सिर का भोजन मिला। उसने बहुत खुश होकर कहाँ मै इसी के लिये प्रार्थना कर रहा था। एक और साधु को प्रार्थना सभा के लिये बुलाया गया। और भोजन के बाद उसको प्रवचन देने के लिये अनुरोध किया गया। उसने उत्तर दिया, "आपने मुझे सिर्फ दाल-चावल ही खिलाया है, मैं क्या प्रचार करुँ?" परन्तु हमारे लिये परमेश्वर की इच्छा पूरी करना ही हमारा असली भोजन है।

म) नये मित्र तथा नये संबंध। मत्ति १२:५०; मरकुस ३:३५; लूका ८:२१ अब हमारे नये भाई और बहने है। बाकी सभी हमारे भाई-बहने नही हो सकते, क्यों कि वे हमे परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने में रुकावट पैदा करते है।

न) नयापेशा। (New vocation) इब्रानियों ३:१, स्वर्गिय बुलाहट के भागिदार। हमारा पेशा स्वर्गिय बुलाहट है। एक मनुष्य को पूछा गया था कि उसका पेशा क्या है। उसने उत्तर दिया, मै मसीह के लिये आत्माओं को जीतता हूँ, पर मेरी

जीविका के लिये मै मछली पकड़ता हूँ। इसी प्रकार हम मे से हरएक का पेशा आत्माओं को जीतना है।

इन सभी वचनों से यह साबित होता है कि हम नई सृष्टि है। जब परमेश्वर की आत्मा हमारे अन्दर आती है, तो वह हमारे हरएक अंग में कार्यरत होती है। यह कार्य तब तक जारी रहता है जब तक हम पूरी रीति से रुपांतरित नही होते। इमारतों में कुछ बदलावा (atterations) किया हुआ आपने शायद देखा होगा। पहले एक दीवार को तोड़कर बनाया जाता है, फिर दूसरी। इसी प्रकार दरवाजे तथा खिड़कियाँ भी बनाई जाती है, और अन्त में सबकुछ नया हो जाता है। इसी रीति से हम भी जब तक यीशु मसीह जैसे नही बनते, तब तक आत्मा का कार्य जारी रहता है।

७. पहचान (IDENTIFICATION)

कृपया रोमियों ६:३-६ पढ़िए। हम प्रभु यीशु मसीह के साथ क्रूसस पर चढ़ाए गए है, गाड़े गए है तथा उसके साथ जी उठे है। हम कह सकते है कि उसकी मृत्यु मेरी मृत्यु है। उसका गाड़ा जाना मेरा गाड़ा जाना है और उसका पुनरुत्थान मेरा पुनरुत्थान है। मैं एक उदाहरण देना चाहूँगा। आपने शायद फूटबॉल मैचेस देखी होंगी। एक पार्टी जीत जाती है और दूसरी हार जाती है। मेरी स्कूली शिक्षा के दौरान मै बहुतसी फुटबॉल मैंचेस देखा करता था जिनमें मेरी स्कूल भी भाग लेती थी, यद्यपि मैं उस खेल में स्वयं न खेलता था। हर साल हमारी स्कूल मैच जीत जाती थी और हम जोर से चिल्लाते थे, "हम जीत गये, हम जीत गये", और हमारी टोपियाँ हवा में फेंक देते थे, जब कि हमने गेंद को स्पर्श भी न किया था। यह रही पहचान। प्रकाशन के द्वारा मैं मेरे उद्धारकर्ता को मरे हुओं में से उठा देखता हूँ जिसने मृत्यु को हराया। हर मनुष्य की आत्मा उसी की ओर से आती है। वह जीवन का कर्ता (author) है। माँस और हड्डियाँ मेरी माँ से मुझे मिली है, पर मेरी आत्मा सीधी परमेश्वर की तरफ से मैं ने पाई है। विश्वास के द्वारा मैं अपने आप को उसमे देखता हूँ। अत: जब वह मरा, मै मरा। जब वह गाड़ा गया, मै गाडा गया। जब व जीवित उठा, मै जीवित उठा। अधीकतर यह सच हमारी समझ के ऊपर निर्भर है। यह कोई गुणसुत्र (formula) नही जिसे हम दोहराते है। यह दरअसल एक सत्य है जिसे प्रकाशन (revelation) के जरिए हमे समझना चाहिए। विश्वास के जरिए मैने स्वयं की उसकी मृत्यु, दफनाया जाने तथा उसके पुनरुत्थान के साथ पहचान बनाई है। कुछ लोग कहते है, "मेरी पत्नी मेरा क्रूस हैं क्यों कि वह मुझे परेशान करती है।" कुछ कहते है उनके माता-पिता उनके लिये

क्रूस है। क्रूस की व्याख्या (meaning) बिल्कुल निराली है। यह प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु की सामर्थ है जो हम में कार्य करती है। कुछ लोग सोचते है क्रूस को गले मे पहनने से वे बड़े धर्मी बन जाते है, पर वे वही पुराने स्वभाव को प्रदर्शित करते है।

दूसरी तरफ जो अपने आप को पेन्टेकोस्टल कहलाते है, मानते है कि आत्मा में परिपूर्ण आनंद मनाने के लिये सारी रात रोना चाहिए। रोने के द्वारा हम आत्मा से नही भर जाते। परमेश्वर शाश्वत तत्वों (eternal principles) पर कार्य करता है। क्या आप पहले से ही भरी हुई बोतल को वापस भर सकते हो? अगर आपको पवित्र आत्मा से भर जाना है तो स्वयं के लिये मरना है तथा स्वयं को खाली करना है। जितनी मैं उसकी मृत्यु, दफनाए जाना तथा उसके पुनरुत्थान से मेरी पहचान बनाते जाऊँगा उतनी ही अधीक रीति से मै रिक्त हो जाऊँगा तथा आत्मा से भरता जाऊँगा। बहुत से मसीह जिन्हे 'फुटबॉल मसीही' कहना उचित होगा, क्यों कि जिस प्रकार एक हल्की सी लात मारने से फुटबॉल जैसे ऊपर उड़ जाती है और अगर उसमे छोटा सा काँटा चुभ जाए तो वह नीचे रह जाती है, वैसे ये भी होते है। "मिस्टर फुटबॉल, क्या बात है?" फुटबॉल उत्तर देता है, "ओह! एक छोटा सा काँटा मेरे अन्दर घुस गया है।" इसी प्रकार ये मसीही भी कन्वेन्शन के दौरान बहुत ऊपर उठते है, पर कुछ दिन बाद एक छोटा सा काँटा उनके जीवन में आ जाता है और वे पंक्चर हो जाते है! यह परमेश्वर की योजना नही है। आप प्रतिदिन मसीह के शरीर (मृत्यु, दफनाया जाना, पुनरुत्थान) के साथ अपने पहचान बनाते हुए अधिक ऊपर और ऊपर जा सकते हो। अत: पौलुस कहता है, मै अपने शरीर (देह) में प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु को ले चलता हूँ। (२ कुरिन्थ ४:१०)। इसी प्रकार आप अपने जीवन के द्वारा मसीह को

प्रदर्शित कर सकते हो। आत्मिक रुप से उसके मृत्यु, दफनाये जाने तथा उसे पुनरुत्थान के साथ हमारी पहचान बनाने के जरिए उसका जीवन हमारे द्वारा प्रकट होता है।

सुबह-सुबह हमारे मन में बहुतसे खयाल (desires) आ जाते है। उनमे से कुछ अच्छे होते है, कुछ इतने अच्छे नही होते। पर अगर आप उसके साथ मरना सिख गये हो तो आप कह सकते हो, "कृपया मेरे विचारों को दूर हटाकर आपके विचार मुझे दिजिए। मेरे स्नेह (affection) को दूर हटाकर आपका स्नेह मुझे दिजिए। मेरी सारी योजनाओं को नष्ट करके आपकी योजनाएँ मेरे जीवन मे लागू हो जाए।" इसलिये आप अपने सभी कार्यों को तथा योजनओं को प्रभु के पास ले आइए। पर आप स्वयं के बलबूते पर स्वयं के लिए मर नही सकते। हम केवल उसकी मृत्यु के सामर्थ के द्वारा ही स्वयं के लिये मर सकते है। जिस प्रकार हमे भिन्न-भिन्न वस्तुओं को काटने के लिये भिन्न-भिन्न औजारों (instruments) की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार हमे हमारे स्वयं (self) को मारने के लिये उसके मृत्यु की आवश्यकता है। मनुष्य जेल मे जाकर कड़ी सजा भुगत सकता है पर वह स्वयं के लिये मर नही सकता।

इफिसियों १:२०-२:१ में हम पढ़ते है, "परमेश्वर ने उसको (यीशु मसीह) मरे हुओं में से जिलाया... और तुम्हे भी जिलाया।" इससे अभिप्राय है कि जब वह मरा, मैं मरा। जब उसे गाड़ा गया, मुझे गाड़ा गया, और जब वह जी उठा, मैं भी उसके साथ जी उठा। विश्वास के जरिए हम इस पहचान को हमारे जीवन में लागू करते है। इसे समझना कठिन है। परन्तु जब आप इस रहस्य को जानते हो, तब आप परमेश्वर की भरपूरी की आनंद लेना आरंभ करते हो।

८. मुक्ति (LIBERATION)

मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; अत: इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूे में फिर से न जुतो। (गलातियों ५:१)। हम हर एक प्रकार की वैध बंधन (legal bondage) से मुक्त किये गये है। व्यवस्था कहती है, "यह करो, वह मत करो", और इत्यादि। पर हम किसी भी प्रकार से कानून के अधीन नही है। अब हम जो भी करते है, खुशी-आनंद के साथ करते है। पुराने नियम में लोग प्रभु को अपनी सम्पत्ति का दशमांश (tithe) दिया करते थे। हम भी ऐसा करते है पर हम यह सक्ति नही बल्कि उल्हास के साथ करते है। अगर आप खुशी से नही देते है तो परमेश्वर आपकी भेंट स्वीकार नही करेगा। पुराने नियम में इस बात की विवशता (compulsion) थी। आज भी कुछ लोग चर्च (आराधना सभा) इसलिये जाते है कि वे सोचते है कि चर्च जाना उनका एक फर्ज (duty) है। फिर वे आराधना सभा समाप्त होने के लिए तरसते है। परन्तु आज हमे आज़ाद किया गया है और हम उसकी उपस्थिति में रहने की अधिकाधिक इच्छा रखते है। पुराने जमाने में माँ को कहना पड़ता था, "विक्टर, तुम ऑफिस जाने से पहले बाइबल पढ़ा करो।" माँ को खुश करने हेतु भाई विक्टर बाइबिल पढ़ा करते थे। पर अब वह बाइबल (परमेश्वर का वचन) पढ़े बगैर जी नही सकता। इसी प्रकार प्रभु ने हमे हरएक प्रकार के कानूनी बंधन से मुक्त किया है। परन्तु हमारा अन्दृनि जीवन (Life within us) हमे प्रार्थना करने, बाइबल पढ़ने, सुसमाचार प्रचार करने तथा इस प्रकार अन्य भले कामों के करने हेतु विवश करता है। हम जानते है कि वर्तमान जगत की मसीहत ९५% कानूनी

(विधि-नियम पर आधारित) है, जिस प्रकार यहुदी धर्म था जो कहता था, "तुम यह करो", और "तुम यह न करो।" क्या हमे प्रार्थना करने के लिए कुछ खास प्रयास की आवश्यकता होती है? जब परमेश्वर का जीवन आपके अन्दर होता है, तो आप इसे बिना किसी प्रयास से आनंद के साथ करते हो। परमेश्वर के भवन में पूरा दिन बताना हमारे लिए आनंद की बात होती है।

शुरुं में मैने सोचा, "मैं एक प्रचारक हूँ, मुझे प्रभु को कुछ पैसे देने की आवश्यकता नही है।" फिर मैं हमेशा कर्जे में रहा करता था। जब मैने प्रभु को देना आरंभ किया, उसने मेरे ऊपर बहुतायत की आशिष बरसाना आरंभ किया। आप जितना दोगे उतना ही अधीक पाओगे। अगर आप विवश होकर देते हो, तो आप कभी वृद्धि नही पाओगे। तो आइए, हम अपनी अज़ादी में स्थिर खड़े होंगे। १ युहन्ना ४:१८ में हम पढ़ते है, "प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है।" दूसरे लोग हमे क्या कहेंगे या क्या करेंगे इससे हम डरते नही है। हम जानते है कि आज्ञा उल्लंघन करने की कीमत आज्ञापालन की कीमत से बड़ी है। क्या किसी ने किसी समय परमेश्वर की आज्ञा मानने क कारण कुछ खोया है? नही! इसी रीति से हम हर एक मनुष्य के भय तथा बन्धन से पूरी तरह आज़ाद हो चुके है। आइए, हम आनंद और उल्लास के साथ परमेश्वर की आज्ञा का पालन करे।

९. रुपांतर (TRANSFORMATION)

"तुम्हारे मन के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।" (रोमियों १२:२)। हमे पूरी रीति से रुपांतरित होना है। यह परमेश्वर की सिद्ध इच्छा को पूरा करने के जरिए होता है। एक बार मैं एक खुशहाल दम्पत्ति से मिला जो ४० वर्ष पूर्व शादी के बन्धन में बंधे हुए थे। इतने साल एकसाथ मेलमिलाप से रहने के कारण उनके चेहरे भी एकसमान दिख रहे थे। इसी रीति से जब हम भी हमेशा प्रभु को प्रसन्न करने की कोशिश करते है, तो हम भी उसके मन तथा उसके स्वभाव को हमारे जीवन में लागू करते हुए पूरी रीति से परिवर्तन पा सकते है। बहुत से लोग सोचते है कि परमेश्वर की इच्छा जानना अपने समय को बरबाद करना है। अगर हम उसके सदृश बनना चाहते है, तो हमे बड़े धीरज से उसकी इच्छा को जानने की कोशीश करनी चाहिए। "क्यों कि जिन्हे उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरुप में हो।" (रोमियों ८:२१)। आप एक सोने का टुकड़ा लेकर सोनार के पास जाएँगे तो वह उसे एक सुन्दर गहने के रुप में परिवर्तित करेगा। उसी प्रकार परमेश्वर भी हमारे जीवनों में कार्य करता है कि वह अपनी सुन्दरता को हमारे जीवनों के द्वारा प्रदर्शित करे जिसे अबतक किसी ने नही देखी है। स्वर्गदूत हमारे दुष्ट हृदय को जानते है। पर जब हम स्वर्ग जाएँगे तो वे आप ही चकित हो जाएँगे जब वे हम में परमेश्वर की सुन्दरता (महिमा), को देखेंगे। यह तब संभव होता

है जब हम हरएक बात में परमेश्वर की इच्छा को देखते है। इसी रीति से परिपूर्ण सिद्धता का कार्य आज से ही शुरु होता है।

१०. पुत्रत्व (SONSHIP)

यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम प्रभु यीशु मसीह के साथ संगि-वारिश (Joint-heirs) बने। एक ऐसे पिता की कल्पना करे जिसके पाँच पुत्र तथा अपार सम्पत्ति है। उनमें से सीर्फ दो पुत्र ही समझदार (sensible) है। अन्य तीन बहुत ही शरारती तथा गैर-जिम्मेदार है। क्या पिता उन तीन मूर्ख पूत्रों को अपनी सम्पत्ति देगा? नही! जो समझदार हैं उन्हे इस सम्पत्ति के ऊपर ज्यादा अधिकार मिलेगा। उसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह के पास भी अपार संपत्ति है। पर इस संपत्ति के ऊपर अधिकार जमाने (उसका आनंद लेने) हेतु हमे आत्मिक रुप से परिपक्व (mature) होना चाहिए। प्रकाशितवाक्य २१:७, "जो जय पाए वही इन वस्तुओं का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा।" "जो जय पाता है वही सभी वस्तुओं का वारिस होगा।" जिस क्षण हम विश्वास करते है, उसी क्षण हमे वह अनंतकाल का जीवन दिया जाता है। परन्तु जो जय पाता है, कवेल वही प्रभु यीशु मसीह की सभी वस्तुओं का वारिस होगा। हरएक विश्वासी इसका अधिकारी नही होगा। जय पानेवाले का पूरा अर्थ प्रकाशितवाक्य के २ तथा ३ अध्याय में पाया जाता है। जब आप परिपक्व होते है तथा पुत्र बनते है तब आप सभी वस्तुओं के वारिस हो जाते है। इसलिए प्रभु यीशु मसीह हमे जो भी काम देते है, हमे उसे विश्वासयोग्यता के

साथ करना चाहिए। हम बेसावधानी तर्था दुर्लक्ष करने के द्वारा आसानी से गिर सकते है। कुछ लोग आधे-दिल से कार्य करनेपर भी बिल्कुल संतुष्ट हो जाते है। वे पूरा प्रतिफल नही पाएँगे। परमेश्वर ने मुझे जो कुछ दिया है उसी के द्वारा मुझे मनुष्य को नही बल्कि परमेश्वर को ही प्रसन्न करना चाहिए। जो थोड़े मे विश्वासयोग्य है वह बहुत में भी विश्वासयोग्य है। (लूका १६:१०)। क्या आप अपने छोटे से काम में विश्वासयोग्य है? तो ही आप इस पुत्रत्व की प्राप्ति कर सकते है।

११. पवित्रिकरण (SANCTIFICATION)

परमेश्वर चाहता है कि हमारी आत्मा, प्राण और देह उसके पवित्र कार्य के लिए अलग किये जाए। "यहोवा ने अपने भक्त को अपने लिये अलग कर रखा है।" (भजन ४:३)। यही सच्चे पवित्रिकरण का अर्थ है। कुछ लोग सोचते है कि पवित्रिकरण एक असाधारण अनुभव (abnormal experience) है। परन्तु पवित्र शास्त्र में इसका अर्थ "परमेश्वर के लिए अलग किया हुआ" ऐसा होता है। कोई भी दूसरा मनुष्य उन्हे छू नही सकता क्यों कि उनकी पूरी आत्मा, पूरा प्राण तथा पूराशरीर मसीह के लिए अलग किया गया है। हमे पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा एवं परमेश्वर के वचन के द्वारा अलग किया जाना चाहिए। यहुदा १:१, "परमेश्वर पिता के द्वारा अलग किये हुए।" १ पतरस १:२, "आत्मा के पवित्र करने के द्वारा", १ कुरिन्थ १:३०, "मसीह यीशु हमारी पवित्रता बना है।" युहन्ना १७:१७, "तेरे वचन के द्वारा तू उन्हे पवित्र कर।" पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा तथा परमेश्वर के वचन के सिद्ध ज्ञान के

अनुसार तुम्हे पवित्र किया गया है। यही पवित्रीकरण है। यह कोई दर्शन देखना या कोई आत्मिक अनुभव लेना नही है जो सीर्फ कुछ मिनटों तक ही बना रहता है। इस पवित्रीकरण को हमे हमारे प्रतिदिन के जीवन में लागू करना चाहिए। "जैसा वह (परमेश्वर) पवित्र है वैसे तुम भी पवित्र बनो।" (१ पतरस १:१६)।

१२. याजकत्व (PRIEST HOOD)

१ पतरस २:९; प्रकाशितवाक्य १:६; ५:९; १० इन वचनों में याजकत्व तथा राजपदाधिकारी एकसाथ मिले हुए नजर आते है। पुराने नियम के समय याजक को दो प्रकार के कर्तव्य निभाने पड़ते थे; सबसे पहले उसे स्वयं को लोगों का प्रतिनिधित्व करते हुए परमेश्र के सम्मुख जाना पड़ता था; और फिर लोगों के लिये परमेश्वर की ओर से संदेशा (Message) लेके आना पड़ता था। हमारे प्रभु ने हम सब को याजक बनाया है। सामान्यत: लोग सोचते है कि जिन्मे पादरी कहा जाता है वे ही याजक है। परन्तु धर्मशास्त्र के मुताबिक हरएक विश्वासी याजक है। यह कार्य हमे पूरा करना है। हमारे जीवनों के द्वारा परमेश्वर बहुतों के जीवनों में आश्चर्य के काम कर सकता है। इसलिए हमे प्रोत्साहन, सांत्वना तथा शांति का शुभसंदेश लोगों के जीवन मे एक पिता, माता, मित्र या सेवक, या पड़ोसी या दूरदेशी रहनेवाले मित्र की नाईं परमेश्वर की ओर से भोर की प्रार्थना के द्वारा लाना चाहिए। पर बहुत कम लोग इस अवसर का लाभ उठाते है।

१३. राजपदाधिकारी (KINGSHIP)

हमे नई सृष्टि के ऊपर राज करने के लिये बुलाया गया है। भारत वर्ष स्वतंत्र होने के पूर्व इसमें ४५० राज्य हुआ करते थे। इन राज्यों के ऊपर राज्य करने का उद्देश्य से राजकुमारों को प्रशिक्षण देने हेतु दो महाविद्यालयों की स्थापना की गई थी। उन्हे बचपन से राज करने का प्रशिक्षण इन महाविद्यालयों में दिया जाता था। आज अगर आपको बंगाल के किसी एक जिले का डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर के रुप मे नियुक्त करोगे क्यों कि आपको इस कार्य का प्रशिक्षण नही दिया गया। इसलिये हमे भी तैयार होना है, क्यों कि परमेश्वर हमे सेवक नही, बल्कि नई सृष्टि (स्वर्ग) के राजकुमार बनाना चाहता है। यह सीर्फ जय पाने के द्वारा ही हम उस सिंहासन पर विराजमान हो सकते है। (प्रकाशितवाक्य ३:२१)। स्वर्ग के सोनेरी सिंहासन सीर्फ बैठने हेतु बनाएगये है ऐसा मत सोचिएगा। सिंहासन से अभिप्राय है अधिकार (१ कुरिन्थ ६:३)। क्या आप जानते नही कि आप स्वर्गदूतों का न्याय करनेवाले है। आपको नई सृष्टि में अधीकार प्रदान किया जायेगा। परन्तु आपको स्वयं को इसके योग्य पृथ्वी पर रहते हुए ही साबित करना चाहिए। कुछ लोग हमेशा परमेश्वर के सामने एक भीखारी-सा ही व्यवहार करते है, और परमेश्वर ने उन्हे जो अधिकार दिया है उसको लागू नही करते।

१४. महिमा (GLORIFICATION)

२ थिस्सलुनिका २:१२, और २ थिस्सलुनिका २:१४; रोमियों ८:१७। अगर हम उसके लिये दु:ख उठाते है, तो उसके साथ राज भी करेंगे। युहन्ना १७:२२ और वह महिमा जो तू ने मुझे दी है, मैने उन्हे दी है। हम एक मर्यादशील मनुष्य होने के कारण इन गरही बातों का समझ नही पाते। कल्पना करे कि एक महान व्यक्ति इस शहर में आता है। फूलों की बहुत सी मालाओं का पहनाकर उसका स्वागत किया जाता है। कल्पना करे कि आपको उनकी बाजू में बैठने के लिये बुलाया गया है, और जो कुछ उन्हे दिया जाता है वह तुम्हे दे देता है, यद्यपि आप उन्ही चीजों को पाने की काबिलियत नही रखते। इसी विचार को यहाँ पर मैं रखना चाहता हूँ। अगर हम आनंद के साथ प्रभु यीशु मसीह के लिए दु:ख उठाते है तो, महिमाप्राप्ति के दिन वह हमे भी उसकी महिमा में सहभागी करेगा क्यों कि वह महिमा का प्रभु है। इस बात को याद रखे कि वह महिमा सीर्फ उसके खातीर दु:ख उठानेवालों के लिये ही आरक्षित है। जब कोई बड़ा व्यक्ति स्टेशन पर आता है तो उसके लिए लाल रंग का गालिचा (Carpet) बिछा दिया जाता है ताकि वह उसपर चले। और उसके लिये एक खास कोच दी जाती है। अगर आप उस व्यक्ति का हाथ पकड़ते हो, तो आप भी इन सुविधाओं का लाभ ले सकते है। जब प्रभु यीशु मसीह की महिमा होगी, तब उसके लिये दु:ख उठानेवालों की भी महिमा होगी। यह तभी सम्भव होगा जब हम उसके साथ एक बन जाएँगे। युहन्नस १७:२१, इस वचन में देखिए, वहाँ पर सर्वप्रथम सहभागिता में एकता है (यह परमेश्वरकी सभी आत्मिक संतान की एकता है), दूसरी,

महिमा में एकता है, और तीसरी सिद्धता में एकता है। यह एकता को प्राप्त करने के द्वारा हम महिमा के योग्य बन जाते है।

इस प्रकार, इन सब बातों के जरिए हम देखते है कि इसे "महान उद्धार" (बड़ा उद्धार) क्यों कहा गया है। उद्धार के इन सभी पहलुओं को सही रीति से समझने के द्वारा हम इस उद्धार का अधिकाधिक आनंद ले सकते है। यदि आप किसी अंगेजी व्यक्ति को आम दे जो कभी भारत में न आया हो, तो वह उसे खाने के लिये चाकू तथा चम्मच का इस्तमाल करेगा। परंतु वही आम आप किसी भारतीय व्यक्ति को देंगे, तो वह उसे रस के आखरी बूँद तक चखेगा और उसके स्वाद का आनंद लेगा। अगर आप किसी ब्राह्मण को मछली दोगे तो, ऐसा करने से आप उसकी अवहेलना करेंगे। पर वही मछली आप किसी बंगाली व्यक्ति को देंगेख तो वह उसका बहुतायत से आनंद लेगा। बहुतसे लोग उद्धार तो पाए है, पर वे उस उद्धार का पूरी रीति से आनंद नही ले पाते। उद्धार का कार्य आप के अन्दर तभी शुरु होता है जब आप का नया जन्म होता है। परमेश्रव के वचन की सही समझ (व्याख्या) हमे हमारे उद्धार के आनंद को पूरी तरह महसूस करने में मदत करती है।